उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्याय तीन

पवित्रशास्त्र की जाँच-पड़ताल करना

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2013 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतर्राष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. मूल अर्थ 1

III. धर्मवैज्ञानिक आधार 3

क. लेखक 3

ख. श्रोता 5

ग. दस्तावेज 8

1. जैविक प्रेरणा 8
2. दिव्य समायोजन 10

IV. महत्व 12

क. कलीसियाई इतिहास 12

ख. आधुनिक कलीसिया 14

V. सारांश 15

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया:
व्याख्या की नींव
अध्याय तीन
पवित्रशास्त्र की जाँच-पड़ताल करना

परिचय

कई अर्थों में, पवित्रशास्त्र का अध्ययन करना मानो एक पुरातात्विक खुदाई के कार्य पर जाने के जैसा है। हम सभी जानते हैं कि पुरातत्वविद् उन सभी चीजों का अध्ययन जो अतीत से आती है, को करने के लिए स्वयं को समर्पित कर देते हैं। वे कलाकृतियों की खुदाई के लिए एक प्राचीन स्थल को खोदते हैं और फिर कलाकृतियों के महत्व को फिर से निर्मित करने के लिए जैसे कि वह पहली बार बनाई गई और प्रयोग की गई थी, अपने सर्वोत्तम श्रमसाध्य को लगा देते हैं। ठीक, कुछ इसी तरह से, पवित्रशास्त्र – अर्थात् बाइबल की जाँच-पड़ताल की खुदाई करने में सम्मिलित है जो कि हमारे पास अतीत से आता है। हम बाइबल के संदर्भों की खोज करते हैं जो कि हमारे पास हजारों साल पहले से आए हैं और उनके महत्व को उनके मूल प्राचीन इतिहास के वातावरण में पुन: निर्मित करते हैं। पवित्रशास्त्र को उनके प्राचीन संदर्भ में जाँच-पड़ताल करना बाइबल की व्याख्या का महत्वपूर्ण आयाम है क्योंकि यह हमें पूरी तरह से विश्वसनीय, अचूक और आधिकारिक अर्थ की खोज करने के लिए सक्षम बनाता है जैसा कि पवित्र आत्मा और इसके मानवीय लेखकों ने इरादा किया था, जब उन्होने पवित्रशास्त्र पहली बार लिखा गया था।

यह *उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव* पर हमारी श्रृंखला का तीसरा अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक "पवित्रशास्त्र की जाँच-पड़ताल करना" दिया है। इस अध्याय में, हम हमारे ध्यान को उन कई अवधारणाओं के ऊपर केन्द्रित करेंगे जो कि पवित्रशास्त्र के अर्थ की खोज करने और पता लगाने के लिए अति महत्वपूर्ण है।

पवित्रशास्त्र की जाँच-पड़ताल की प्रक्रिया पर हमारा विचार विमर्श तीन भागों में विभाजित रहेगा। सबसे पहला, हम इसके मूल अर्थ की परिभाषा देंगे, जो कि हमारी जाँच-पड़ताल की वस्तु है। दूसरा, हम पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए धर्मवैज्ञानिक आधार को स्पष्ट करेंगे। और तीसरा, हम मूल अर्थ पर सही ध्यान देने के लिए इसकी महत्वपूर्णता को देखेंगे। आइए मूल अर्थ की परिभाषा के साथ आरम्भ करें।

मूल अर्थ

हम सबने इस बात का अनुभव किया है कि जब हमने कुछ कहा या कुछ लिखा तो उसे किसी के द्वारा गलत समझ लिया गया हो, और हम अक्सर कुछ इस तरह से कहते हैं कि, "तुम जानते हो कि, मेरे कहने का यह आशय नहीं था।" हम यह बिल्कुल भी पसन्द नहीं करते हैं कि जब लोग हमारे शब्दों को इस तरह से उपयोग करते हैं जो कि हमने जो कुछ इच्छित नहीं किया होता उसके विरूद्ध हो जाता हो। और अक्सर कुछ शब्द का स्पष्टीकरण बातों को सुलझा देता है। परन्तु जब बात हजारों साल पहले कहे हुए या लिखे हुए के मूल अर्थ का पता लगाने की आती है, जैसे कि पवित्रशास्त्र, तो चीजें इतनी आसान नहीं होती है। हमें धीमा हो जाना चाहिए और कुछ प्रश्नों को पूछना चाहिए। बाइबल के किसी एक संदर्भ के "मूल अर्थ" से आपका क्या आशय है? हमें इसमें क्यों रूचि लेनी चाहिए? यह हमारे आज के समय के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

असँख्य विद्वानों ने मूल अर्थ को कैसे परिभाषित किया जाना चाहिए पर बहस की है। परन्तु इस श्रृंखला के प्रयोजनों के लिए, हम एक मूलपाठ के रूप में मूल अर्थ को इस तरह से परिभाषित करेंगे:

> **वे अवधारणाएँ, व्यवहार और भावनाएँ जिन्हें दिव्य और मानव लेखकों ने संयुक्त रूप से अपने पहले श्रोताओं को सम्प्रेषित करने के लिए दिए गए दस्तावेज़ में इच्छित किया।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

यह सुनिश्चित रहे कि, ये परिभाषा जटिलताओं की एक बड़ी संख्या को जन्म देती है, और जब अपने अध्ययन में उनमें से कुछ का निपटारा भी करते हैं।

आइए सबसे पहले शब्द "सम्प्रेषण" या संवाद से आरम्भ करें, जिसे हम जहाँ तक सम्भव हो इसके व्यापक अर्थों में लेंगे। पवित्र शास्त्र के दोनों अर्थात् पवित्र आत्मा और मानवीय लेखक यह चाहते थे कि बाइबल की पुस्तकें कई स्तरों पर सम्प्रेषण के कार्य को करें। दुर्भाग्यवश्, हम में ऐसी सोच की प्रवृति है कि पवित्रशास्त्र मौलिक रूप से विचारों या अवधारणाओं की शब्दावली में सम्प्रेषण का कार्य करता है जिसे बाइबल के लेखक उनके श्रोताओं को सम्प्रेषित करना चाहते थे। परन्तु बाइबल के अर्थ इसकी अपेक्षाकृत तुलना में ज्यादा गहन अर्थ रखते हैं। जैसा की एक परम्परा ऐसा उदाहरण देती है कि, पवित्रशास्त्र सिर, हाथ और हृदय की शब्दावली में संचार कार्य करता है, या फिर उस शब्दावली में करता है जिसे हमने इस अध्याय में उपयोग किया है, यह अवधारणाओं, व्यवहार और भावनाओं के संदर्भ में संचार कार्य करता है। बाइबल के लेखकों ने पवित्रशास्त्र को इस तरह से रूपरेखित किया है कि यह स्वयं की अवधारणाओं, व्यवहार और भावनाओं के प्रति, साथ ही अन्य पुस्तकें जिनमें उन्हें वर्णित किया गया है, के ध्यान को स्वयं की ओर आकर्षित कर लेती हैं। परन्तु इन सबसे बढ़कर, बाइबल के मूलपाठों को उनके श्रोताओं की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को परिवर्तित करने के लिए और उनको प्रभावित करने के लिए भी इनको इच्छित किया गया है।

जैसा कि 2 तीमुथियुस 3:16-17 में हम पढ़ते हैं कि

हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए (2 तीमुथियुस 3:16-17)।

पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र को विश्वासियों के जीवनों में और अधिक और इन सभी बातों को पूरा करने के लिए रूपरेखित किया। इसलिए जब हम यह कहते हैं कि हमारी जाँच-पड़ताल मूल अर्थ की खोज करने के लिए इच्छित की गई है, तो हम बस यह पता नहीं लगा रहे हैं कि एक शब्द के संकीर्ण बौद्धिक अर्थ में शब्दों और वाक्यों का क्या अर्थ रहा होगा। इसकी तुलना में, हम पूरी मात्रा में इस प्रभाव को देख रहे हैं जिसे लेखकों ने उनके पहले श्रोताओं के जीवनों में इच्छित किया।

जब हम मूल अर्थ की अवधारणा के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हैं, तो इसे तीन मुख्य विचारों की शब्दावली में सोचना सहायतापूर्ण होगा: बाइबल के दस्तावेज जिनकी हम जाँच-पड़ताल कर रहे हैं, वे मानवीय लेखक जिन्हें पवित्र आत्मा ने दस्तावेजों को लिखने के लिए प्रेरित किया, और वे श्रोता जिनके लिए लेखकों ने इच्छित किया कि वे इन दस्तावेजों को प्राप्त करने वाले प्रथम प्राप्तकर्ता हों।

दस्तावेज महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वास्तव में परमेश्वर का वचन है जिसे प्रथम श्रोताओं को भेजा गया था। मानवीय लेखक महत्वपूर्ण है क्योंकि, जैविक प्रेरणा की प्रक्रिया के माध्यम से, दस्तावेज लेखक के विचारों, अभिप्रायों, भावनाओं, साहित्यिक कौशल और ऐसी ही और बातों को दर्शाता है। और श्रोता महत्वपूर्ण है क्योंकि दोनों अर्थात् पवित्र आत्मा और मानवीय लेखकों ने दस्तावेज को इस तरह से निर्मित किया कि उनके स्वयं के संदर्भ और परिस्थितियों में विशेष रूप से बोले। इसका अर्थ यह हुआ कि बाइबल का प्रत्येक मूलपाठ अपने इतिहास के किसी भी समय में और मूलपाठ के वास्तविक श्रोताओं के द्वारा अनुभव की जानी वाली जीवन-की-स्थिति की ऐतिहासिक परिस्थितियों के लिए, या उसे अपने में समायोजित करने के लिए थी।

यह सच है कि मानवीय लेखकों ने दस्तावेजों को निर्मित किया जो कि उनके श्रोताओं को इस तरह से प्रभावित करते हैं जिनका उन्होंने कभी इरादा नहीं किया था। परन्तु जाँच-पड़ताल की प्रक्रिया में, हम विशेषतौर पर इस बात में रूचि रखते हैं कि कैसे बाइबल के लेखकों ने उनके दस्तावेजों के माध्यम से मूल श्रोताओं को प्रभावित करने का इरादा रखा। इस लिए, बाइबल के एक संदर्भ की जाँच-पड़ताल करने के मूल अर्थ में मूल पाठ की इस तरह से खोज की जाती है कि मानो यह अभी भी लेखक और इसके प्रथम श्रोता के बीच की ऐतिहासिक परिस्थितियों में हो। इस तरह की खोज में बहुत ज्यादा अनुसन्धान, सचेत सोच और कल्पना की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में, इसमें बहुत ज्यादा मानवीय प्रयासों की आवश्यकता होती है क्योंकि बाइबल के दस्तावेज उनकी मूल वातावरण में अब और ज्यादा विद्यमान नहीं है।

मूल अर्थ की इस समझ को अपने मन में रखते हुए, आइए हम इसके धर्मवैज्ञानिक आधार पर जोर देकर इसे सम्बोधित करें जब हम पवित्रशास्त्र की जाँच-पड़ताल कर रहे होते हैं।

धर्मवैज्ञानिक आधार

पवित्रशास्त्र की हमारी जाँच-पड़ताल में मूल अर्थ के तीन पहलूओं पर जोर देने के लिए सही धर्मवैज्ञानिक आधार हैं। सबसे पहले, हम लेखक पर ध्यान देने के लिए धर्मवैज्ञानिक आधार के बारे में बोलेंगे। दूसरा, हम मूल श्रोताओं पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। और तीसरा, हम दस्तावेजों की कार्य प्रणाली पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। आइए सबसे पहले मानवीय लेखकों के लिए धर्मवैज्ञानिक आधार पर ध्यान केन्द्रित करते हुए आरम्भ करें।

लेखक

पिछले किसी एक अध्याय में, हमने यह उल्लेख किया कि बाइबल जैविक रूप से परमेश्वर की ओर से प्रेरित है। पवित्र आत्मा ने बाइबल के मानवीय लेखकों के व्यक्तित्वों, अनुभवों, भावनाओं और विचारों की संरचना के माध्यम से अपने शब्दों को सम्प्रेषित करने के लिए चुना। और बाइबल के कई स्थान ऐसे हैं जहाँ पर मानवीय लेखकों की महत्वपूर्णता को स्पष्ट तौर पर उल्लेख किया गया है। उदाहरण के लिए, सुनिए मत्ती 22:41-45 में यीशु ने क्या कहा:

> **यीशु ने उन से पूछा, "कि मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो? वह किस की सन्तान है?" उन्हों ने उस से कहा, "दाऊद की"। उस ने उन से पूछा, "तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है? कि 'प्रभु ने', मेरे प्रभु से कहा; 'मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।'" भला, जब दाऊद उसे 'प्रभु' कहता है, तो वह उसका पुत्र क्योंकर ठहरा? (मत्ती 22:41-45)।**

इस संदर्भ में, यीशु ने दाऊद के द्वारा लिखे हुए भजन 110 के बारे में संकेत दिया है। और उसने भजन की अपनी व्याख्या को विशेष तौर पर इस सच्चाई के साथ बाँध दिया है कि इसका मानवीय लेखक दाऊद था।

यीशु ने संकेत दिया कि क्योंकि दाऊद ने मसीह को "प्रभु" कह कर पुकारा परिणामस्वरूप मसीह दाऊद का साधारण पुत्र नहीं हो सकता है। मसीह को यहाँ तक कि दाऊद से भी अधिक महान् होना था। सच्चाई तो यह है कि यीशु का तर्क केवल उसी समय समझ आता है जब हम इस सच्चाई पर ध्यान देते हैं कि दाऊद ने इस भजन को लिखा। और जैसा यीशु ने यहाँ किया, सभी तरह की उत्तरदायी व्याख्या बाइबल की पुस्तकों के मानवीय लेखकों की महत्वपूर्णता को स्वीकार करती है।

> **बाइबल को पढ़ने और इसका अध्ययन करने के आनन्द में से एक उन मनुष्यों के गहन ज्ञान के पास आने का है जिन्होंने बाइबल को लिखा। और अक्सर हमें गहरी समझ देने के लिए, यह पवित्रशास्त्र को हम पर प्रकाशित करने का एक तरीका है। इसमें सभी तरह के उदाहरण दिए गए हैं। मैं सोचता हूँ कि, उदाहरण के लिए, यिर्मयाह, रोने वाले भविष्यद्वक्ता की सेवकाई, और इसे समझना कि जब उसने यरूशलेम में रहने वाले परमेश्वर के लोगों के विरूद्ध भविष्यद्वाणियाँ की तो वह कैसे बातों में से हो गया और तब वास्तव में उसने परमेश्वर के न्याय को उस शहर के ऊपर आते हुए देखा और तब उस विपत्ति के लिए विलाप किया जो उस शहर के ऊपर आ पड़ा था, हमें यिर्मयाह की पूरी पुस्तक की गहरी, सुदृढ़ समझ को देती है। या उन बातों के बारे में सोचें जिन्हें हम प्रेरित पौलुस के बारे में जानते हैं और यह कि उसकी पत्रियों को उन कहानियों के संदर्भ में पढ़ना कितना सहायतापूर्ण है जिन्हें प्रेरितों के काम की पुस्तक में उसकी सेवकाई के बारे में बोला गया है। बाइबल उसके अर्थ को बाइबल के लेखकों के जीवन और अनुभव के माध्यम से इसे समझने के लिए अधिक शक्तिशाली बना कर हमारी सहायता करती है, और फिर इसकी शिक्षा को इसके उचित संदर्भ में रखती है।**
>
> **-डॉ फिलिप्प रेयकेन**

मानवीय लेखकों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करना हमें पवित्रशास्त्र के कई गुणों को समझने में सहायता करता है। एक और उदाहरण में, दाऊद के शासन के बारे में 2 शमूएल और 1 इतिहास में दी हुई कहानी के बारे में ध्यान दें। 2 शमूएल दाऊद के बेतशेबा के साथ किए हुए पाप और दाऊद के पाप के बाद अबशालोम के विद्रोह के बारे में

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

नौ अध्यायों को समर्पित करती है। परन्तु 1 इतिहास इन कहानियों के किसी भी भाग के बारे में नहीं बताता है। यह यहाँ तक कि दाऊद की वंशावली को छोड़ बेतशेबा और अबशालोम के नामों का भी कहीं भी उल्लेख नहीं करता है। क्यों इतिहासकार दाऊद के जीवन की ऐसी मुख्य घटनाओं को लिखना छोड़ना चाहता है? इसके उत्तर का शमूएल और इतिहास की पुस्तकों को लिखने वाले मानवीय लेखकों की ऐतिहासिक परिस्थितियों के साथ लेने देने से है। शमूएल की पुस्तकों के लेखक की चिंता इस बात को दर्शाने में थी कि दाऊद का वंश दाऊद की कमजोरियों के बावजूद इस्राएल के लिए परमेश्वर के द्वारा चुना हुआ होने से है, परिणामस्वरूप, दाऊद की कहानी में यह बताना कि उनके पाप के प्रति कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की लेखक का कहानी के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अति महत्वपूर्ण है। परन्तु इतिहास की पुस्तकों को लिखने वाला लेखक निर्वासन से वापस आए इस्राएलियों के इतिहास को श्रोताओं के लिए बहुत संक्षिप्त में लिख रहा था। उसने शमूएल का विरोध नहीं किया, परन्तु उसने दाऊद के जीवन के उन हिस्सों को ही वर्णित किया जो कि उसकी कहानी के उद्देश्यों की प्राप्ति के अनुकूल थे, जो कि वापस आए हुए नेताओं को यह शिक्षा देने के लिए थे कि दाऊदवंशीय राजाओं ने इस्राएल में कैसे राज्य किया।

आज विशेषकर हमारे पास बहुत सी सूचनायें उपलब्ध हैं दोनों अर्थात् मूल वातावरण के बारे में जब बाइबल की पुस्तकों को लिखा जा रहा था दोनों अर्थात् उनके लेखकों के संदर्भ में और साथ ही उनके श्रोताओं के संदर्भ में। और वे सूचनायें बहुत, बहुत ही ज्यादा सहायतापूर्ण हो सकती है, विशेषकर, हमें एक मूलपाठ के उपयोग में लाने और सुरक्षित पठ्न के लिए बुद्धिमान बनाने के लिए सहायक हो सकती है ताकि हम वैसा कुछ नहीं कह रहे हैं जो कि किसी भी तरह से जो कुछ मूल लेखक ने इच्छित किया या मूल श्रोताओं ने सुना है, से सम्बन्धित ही न हो। तौभी कई बार, मैं सोचता हूँ कि इस तरह की सूचनायें, बाइबल के लेखक और बाइबल के श्रोताओं की पृष्ठभूमि की सूचना के बारे में, मैं जो वर्णन देना चाहता हूँ वह "एक अच्छे सेवक और एक बुरे स्वामी" का है। यह वास्तव में जब हम बाइबल की व्याख्या कर रहे हैं को सहायता कर सकता है, परन्तु यदि हम इसे मुख्य तरीका और मुख्य मार्ग बना लें जिसके द्वारा हम यह सोचें कि बाइबल ऐसा कह रही है, तो मैं सोचता हूँ कि यह हमारी समझ को अक्सर सीमित करेगा और यहाँ तक कि यह कई स्थानों पर गलत अनुमान दे सकता है। इस लिए, यह सहायतापूर्ण तो है, परन्तु इसे स्वयं के लिए पवित्रशास्त्र के अपने अध्ययन में आरम्भ या अन्त तक मुख्य लक्ष्य न बनायें।

-डॉ जोनाथन टी पेर्निंगटन

पवित्रशास्त्र के किसी एक विशेष हिस्से को समझने के लिए लेखक के वास्तविक संदर्भ को जानना एक अविश्वनीय मूल्य रखता है। परन्तु सबसे पहले चेतावनी के रूप में थोड़ा बहुत कहना: वास्तव में पवित्रशास्त्र का अधिकार जो कुछ लिखा गया है उसमें है, न कि हमारी कल्पना में या लेखक की पृष्ठभूमि के पुन: निर्मित करने में। इसलिए, जब तक हम यह स्मरण रखते हैं कि उनके शब्द सच्चे हैं यहाँ तक कि जब हम पूरी तरह से लेखक की पृष्ठभूमि को समझते भी नहीं है, वह हमारे लिए महत्वपूर्ण होता है। परन्तु यदि हम लेखक के संदर्भ और उसके व्यक्तित्व से कुछ ज्यादा समझ सकते हैं, तो यह हमारी सहायता करेगा। और मैं सोचता हूँ कि यह हमारी उनके साथ काल्पनिक सम्पर्कों को बनाने की क्षमता में सहायता करेगा। और इसलिए हम यह कल्पना कर सकते हैं कि पौलुस कारागृह में है और यह देख सकते हैं कि वहाँ पर होना कैसा होता होगा, और हम एक तरह से उनके साथ सहज और काल्पनिक सम्पर्कों को बना सकते हैं। और यह पवित्रशास्त्र को हमारे लिए मात्र ठोस या द्वि-आयामी नहीं, वरन् त्रि-आयामी बना देगा।

-डॉ पीटर वालकर

ऐसे संदर्भ जिनमें से एक को हमने ऊपर उल्लेखित किया है, पवित्रशास्त्र यह दर्शाता है कि यह हमारे लिए कितना अधिक महत्वपूर्ण है कि हम हमारे ध्यान को न केवल पवित्रशास्त्र के मौलिक लेखक परमेश्वर के ऊपर केन्द्रित करें वरन् उन मानवीय लेखकों के ऊपर भी जिन्हें उसने प्रेरित किया। और इसका अर्थ यह हुआ हमें जितना ज्यादा सम्भव हो उतना अधिक इन लेखकों की परिस्थितियों, व्यक्तित्वों, अनुभवों, कौशलों और अभिप्रायों के बारे में सीखना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

बाइबल के दस्तावेज के मूल लेखक के ऊपर जोर देकर हमने इसके धर्मवैज्ञानिक आधार को देख लिया है, इसलिए आइए हम अब मूल अर्थ के बारे में हमारी जाँच-पड़ताल के दूसरे महत्वपूर्ण पहलू की ओर मुड़ें: जो कि दस्तावेज को प्राप्त करने वाले प्रथम प्राप्तकर्ता या श्रोता थे।

श्रोता

क्या आपने कभी ध्यान दिया कि बाइबल के सम्पूर्ण इतिहास में परमेश्वर ने उसके वचन को उसके लोगों को इस तरह से दिया जो कि उनकी ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुकूल थे? कल्पना कीजिए कि यदि परमेश्वर इस्राएल को दस आज्ञाओं का एक कम्प्यूटरीकृत संस्करण देता तो कैसा होता? या फिर यदि परमेश्वर आरम्भ की कलीसिया को आधुनिक फ्रेंच या मंदारिन भाषाओं में नए नियम का शास्त्र देता तो कैसा होता? ये परिदृश्य उनके लिए कोई अर्थ नहीं रखते हैं क्योंकि पवित्रशास्त्र के मूल श्रोता समझ ही नहीं पाते कि परमेश्वर उनसे क्या कह रहा है। और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, ऐसा कुछ परमेश्वर ने बिल्कुल भी नहीं किया। उसने दस आज्ञाओं को पत्थरों के ऊपर लिखा। उसने मसीह के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं का मार्गदर्शन यूनानी भाषा में लिखने के लिए किया। सच्चाई तो यह है कि, सम्पूर्ण बाइबल के इतिहास में, कम मात्रा में या अधिक मात्रा में, परमेश्वर ने सदैव उसके प्रकाशन को उसके मूल श्रोताओं के साथ समायोजित किया ताकि वह उसे समझ सके।

दिव्य समायोजन का विचार यह है कि:

परमेश्वर ने उसके प्रकाशन को प्रथम श्रोता को समझने के लिए रूपरेखित किया।

उसने पवित्रशास्त्र के शब्दों और विचारों को प्रथम श्रोताओं की संस्कृति, प्रौद्योगिकी, सामाजिक संरचनाओं और यहाँ तक कि उनके धार्मिक अनुभवों के अनुकूल बनाया, ताकि वे समझ सकें कि वह क्या कह रहा था।

यह हमें दिव्य समायोजन को सामान्य से विशिष्ठ समायोजन की मात्रा की विस्तृत सीमा के अर्थों में देखने में सहायता करता है। सीमा के अन्त में, पवित्रशास्त्र का प्रत्येक हिस्सा सार्वभौमिक मानवीय स्थिति के अनुकूल लिखा गया था। इसके द्वारा हमारे कहने का अर्थ यह है कि प्रत्येक बार परमेश्वर ने स्वयं को जब भी मानवीय प्राणियों को प्रकाशित किया है, उसने ऐसा इस तरीके से किया है कि यह उनके लिए उपयोगी हो, एक तरीके से या किसी अन्य तरीके से, पूरे इतिहास में प्रत्येक मानवीय प्राणी के साथ उसने ऐसा ही किया है।

जॉन काल्विन द्वारा मसीही विश्वास के संस्थान अर्थात् *इन्स्टीट्यूट आफ क्रिस्चीयन रिलीजन* में समायोजन के सामान्य पहलूओं के वर्णन को, उसकी पुस्तक 1 अध्याय 13 के भाग 1 में से सुने:

> **कौन...इसे नहीं समझता है कि, जैसे नर्सें सामान्यत: शिशुओं के साथ करती हैं, परमेश्वर हमसे बोलने के द्वारा हमारे "तुतलाने" का माप करना चाहता है?...इस तरह का बोलना... उसके ज्ञान को हमारी थोड़ी सी क्षमता के साथ समायोजित करता है।**

जैसा कि काल्विन ने संकेत दिया, परमेश्वर का मन हमारे मन से इतना ज्यादा परे है कि उसे हमारे साथ ऐसे बोलना पड़ता है जैसे नर्सें एक दाई के रुप में शिशु से बातें करती हैं। क्योंकि परमेश्वर हमारी तुलना में अपार रूप से महान् है, इसे हमें समझने के लिए बहुत नीचे तक आ कर रूकना पड़ता है।

हम इस तरह की सार्वभौमिक समायोजन को सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में पाते हैं। यह सबसे ज्यादा नाटकीय रूप में मानवीकरण में मिलता है – अर्थात् ऐसे समय जब परमेश्वर इस तरीके से बोलता, व्यवहार करता या प्रगट होता जो मानो लगभग मनुष्य जैसा दिखाई देता हो। परमेश्वर मानवीय भाषा को बोलता है; वह दुखित होता है; वह अपने अभिप्रायों को परिवर्तित करता है; वह प्रश्न पूछता है। दिव्य प्रकाशन के ये और कई अन्य असँख्य गुण सामान्य मानवीय सीमितताओं को पूरा करने के लिए रूपरेखित किए गए थे।

दिव्य समायोजन की परछाई के मध्य में, परमेश्वर ने अपने प्रकाशन को सांस्कृतिक अपेक्षाओं के अनुरूप भी कर दिया। उदाहरण के लिए, उसने स्वयं को निकट पूर्व प्राचीन संस्कृतियों में प्रकाशित किया। और इस सांस्कृतिक संदर्भ में, उसने वाचा को स्थापित किया जो कि निकट पूर्व की अंतरराष्ट्रीय संधियों के साथ मिलती जुलती थी। भाषा के सम्बन्ध में, परमेश्वर ने स्वयं को उसके पहले श्रोताओं के मध्य विशिष्ठ भाषाओं के माध्यम से

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

प्रकट किया, जैसे कि इस्राएल के राष्ट्र में पुराने नियम के लिए इब्रानी और अरामी भाषा के द्वारा और अंतरराष्ट्रीय नये नियम की कलीसिया में यूनानी भाषा के द्वारा। बाइबल में दिव्य प्रकाशन ने मूल श्रोताओं की इन व्यापक सांस्कृतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखा। मत्ती 19:8 में सांस्कृतिक अपेक्षाओं के समायोजन के बारे में क्या कहा गया है, को सुनिए

यीशु ने उन से कहा, "मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी पत्नी को छोड़ देने की आज्ञा दी, परन्तु आरम्भ में ऐसा नहीं था।"

इससे पहले की आयतों में, यीशु ने कहा है कि परमेश्वर ने विवाह को सृष्टि के निर्मित किए जाने के समय ठहराया, और तलाक वैवाहिक आदर्श के जीवन का हिस्सा नहीं था। फिर वह आगे यह वर्णन करता गया कि मूसा ने व्यवस्थाविवरण 24:1-4 में तलाक के लिए अनुमति केवल इसलिए दी क्योंकि इस्राएलियों के पापपूर्ण मन की कठोरता के कारण।

व्यवस्थाविवरण 24 में, मूसा ने एक कानून दिया जिसमें एक त्यागी हुई स्त्री को त्यागपत्र लिख के दिए जाने की आवश्यकता को दिया गया है। यीशु के दिनों में कुछ फरीसियों ने इस हिस्से को किसी भी कारण से तलाक दिए जाने के लिए त्यागपत्र लिख के दिए जाने के औचित्य को प्रमाणित करने के लिए उपयोग किया। परन्तु ध्यान दीजिए कि कैसे यीशु ने मूल श्रोताओं को परमेश्वर प्रदत्त तथ्य के साथ समायोजित किया। उसने कहा कि परमेश्वर ने यह व्यवस्था इसलिए दी क्योंकि "तुम्हारे मन कठोर" थे। इस आधार पर, यीशु ने तलाक के ऊपर इसके प्रथम श्रोताओं, अर्थात् इस्राएल राष्ट्र को समायोजित करने के लिए यह तर्क दिया कि मूसा ने तो केवल "अनुमति" दी थी। तलाक आदर्श नहीं था, और यह वास्तव में स्वीकार्य नहीं था परन्तु इस्राएल के हठ और न क्षमा किए जाने वाले मन के आलोक में, परमेश्वर ने उस तलाकनामे को उस नुकसान को कम करने के लिए एक तरीके के रूप में दिया जो उनके पाप के द्वारा होता है।

यह उदाहरण संकेत देता है कि बाइबल के एक संदर्भ के मूल श्रोताओं की जाँच-पड़ताल करना कितना महत्वपूर्ण है। यीशु के द्वारा फरीसियों के इस मूल अभ्यास में सुधार किया जाना पवित्रशास्त्र के मूल श्रोताओं के लिए मूसा की व्यवस्था के दिव्य समायोजन में टिका हुआ है।

परछाई के दूसरे छोर पर, परमेश्वर ने उसके प्रकाशन को व्यक्तियों को समायोजित करने के लिए भी किया, जैसे कि वे विशेष लोगों, जिनके द्वारा उसने बोला। उसने एक विशेष लोगों के समूह की शक्तियों और कमजोरियों, उपलब्धियों और विफलताओं को अपने ध्यान में लिया, और यहाँ तक कि कुछ विशिष्ट लोगों की भी।

उदाहरण के लिए, नए नियम में हमारे पास बहुत सी पत्रियाँ हैं जो कि विशेष कलीसिया या अन्य किसी कलीसिया को सम्बोधित करके लिखी गई हैं। और इन पत्रों में, जैसे कि कुलुस्सियों 3 जैसे स्थानों में, हम ऐसी शिक्षाओं को पाते हैं जो कि उन्हीं कलीसियाओं के छोटे समूहों के लिए दी गई हैं जैसे कि पिताओं के लिए, बच्चों के लिए, गुलामों के लिए और स्वामियों के लिए। और कई बार पौलुस के पत्रों में, जैसे कि फिलेमोन, 1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस जो कि वास्तव में किसी एक विशेष व्यक्ति को लिखे गए हैं। कई तरह से, पवित्र आत्मा ने इन पवित्रशास्त्रीय प्रकाशनों को उनके मूल श्रोताओं की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आकार दिया है। इसलिए इन प्रकाशनों को उचित तरीके से समझने के क्रम में, हमें जितना ज्यादा हो सके उतना ही उन मूल श्रोताओं के बारे में सीखना चाहिए।

ठीक है, आरम्भिक पाठकों के संदर्भ को समझना हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है जब बाइबल के लेखक किसी एक विशेष समूह के श्रोताओं के लिए लिख रहे थे। यह बहुत, बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, जब आप इब्रानियों की पुस्तक को लेते हैं...तो वहाँ पर लेखक, जिसे हम नहीं जानते हैं, वह लेखक एक ऐसे श्रोताओं के समूह को लिख रहा है जो कि यहूदी मसीही विश्वासियों का बिखरा हुआ समूह है, और उन्हें सताया जा रहा था। और उनके पास वापस यहूदी धर्म में चले जाने की प्रत्येक सम्भव परीक्षा थी क्योंकि उनको यहूदी धर्म में कुछ स्तर तक सुरक्षा प्रदान थी। और इसलिए जब लोग जो उन्हें सताने के लिए आ रहे थे, तो उनके पास प्रत्येक सम्भव परीक्षा थी कि वे अपने मसीही विश्वास का त्याग कर देते। इसलिए जो कुछ लेखक यहाँ पर कर रहा है वह ऐतिहासिक संदर्भ को समझने, पाठकों को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

समझने का प्रयास कर रहा है, और उन्हें यीशु मसीह नाम के व्यक्ति की सर्वश्रेष्ठता के बारे में अन्य व्यक्तियों की और पुराने नियम के विधियों की तुलना में प्रोत्साहित करने का प्रयास कर रहा है।

- डॉ स्टीफन उम

परमेश्वर ने स्वयं को मूल श्रोताओं के एक समूह को, विशेष स्थान के लोगों पर, विशेष समय में प्रकाशित किया। यह बाइबल के बारे में उल्लेखनीय बातों में से एक है। यह ऊपर से आए हुए नुस्खों का एक संग्रह मात्र नहीं है। परमेश्वर विशेष परिस्थिति में, विशेष समूह के लोगों को सम्बोधित कर रहा था, और इस तरह से हम जानते हैं कि वह कैसे समझे कि वे परमेश्वर से सुन रहे थे, वे परमेश्वर से क्या प्राप्त कर रहे थे, यह हमारी सहायता करता है कि हमारी समझ की कौन सी सीमायें हैं। यदि मैं बाइबल को जैसा मूल श्रोताओं ने समझा उससे बहुत ही ज्यादा भिन्न तरीके से समझ रहा हूँ, तो वहाँ पर कुछ गड़बड़ी है। निश्चित ही, मेरा अपना संदर्भ एक भिन्नता को लाएगा, परन्तु मेरा अपने संदर्भ को उनके संदर्भ के आलोक में समझना होगा, और तब मुझे पता चल जाएगा कि कदाचित् व्याख्या की सीमायें क्या होती है।

-डॉ जॉन औस्वाल्ट

अभी तक हमने अपने विचार विमर्श में पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ के प्रति हमारी जाँच-पड़ताल के लिए धर्मवैज्ञानिक आधार के ऊपर ध्यान केन्द्रित किया, हमने लेखक और मूल श्रोताओं के महत्व के ऊपर ध्यान केन्द्रित किया। अब इस स्थान पर, हम बाइबल के दस्तावेज के ऊपर ध्यान केन्द्रित करने के लिए तैयार हैं।

दस्तावेज

यह स्पष्ट होना चाहिए कि यदि हम बाइबल के किसी एक संदर्भ के मूल अर्थ को जानना चाहते हैं तो, हमें उसी संदर्भ के ऊपर देखना चाहिए। अब हममें से बहुतों के लिए, इसका अर्थ यह है कि हम सामान्य तौर पर केवल बाइबल के अपने आधुनिक अनुवादों को ही पढ़ते हैं। आधुनिक अनुवाद अचूक नहीं है, परन्तु वे कलीसिया की बहुत सी महत्वपूर्ण शिक्षण सेवकाइयों को प्रस्तुत करते हैं। और जब तक हम किसी एक विशेष शब्द या वाक्य के ऊपर बहुत ज्यादा निर्भर नहीं होने के लिए सचेत रहते हैं जो कि एक अनुवाद या अन्य किसी अनुवाद से भिन्न होता है, हम उन अनुवादों से ही बहुत कुछ सीख सकते हैं, जिन्हें हम प्रयोग करते हैं। परन्तु जैसा कि यह अध्याय जोर देता है कि, हमें वह सब कुछ करना चाहिए जिससे की हम बाइबल के संदर्भों के मूल अर्थ को अच्छी तरह से पकड़ सकें – कि परमेश्वर के आत्मा और जिन लेखकों को उसने प्रेरित किया उनकी इसमें क्या इच्छा थी। इसलिए, जब परमेश्वर हमें अवसर देता है, तो हमें जितना ज्यादा सम्भव हो सके उतना ही इसे पवित्रशास्त्र की मूल भाषा: पुराने नियम की इब्रानी और अरामी और नए नियम की यूनानी भाषा से परिचित हो जाना चाहिए। अब हममें से कुछ लोग इन भाषाओं में विशेषज्ञ हो जाएंगे, परन्तु जितना ज्यादा हम इनके बारे में जानेंगे, उतना ज्यादा ही हम पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ को समझने में सक्षम हो जाएंगे।

जैविक प्रेरणा का सिद्धान्त, और दिव्य समायोजन का सिद्धान्त: बाइबल के दस्तावेज में हमारी जाँच-पड़ताल पर जोर देते हुए धर्म वैज्ञानिक आधार के लिए मुख्य तौर पर दो महत्वपूर्ण सिद्धान्त पाए जा सकते हैं। आइए जैविक प्रेरणा के सिद्धान्त के साथ आरम्भ करते हुए यह देखें कि कैसे इनमें से प्रत्येक सिद्धान्त बाइबल के दस्तावेजों की महत्वपूर्णता की ओर संकेत करता है।

जैविक प्रेरणा

जैविक प्रेरणा का सिद्धान्त यह शिक्षा देता है कि पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र को लिखने के लिए मानवीय लेखकों को प्रेरित किया. परन्तु यह ऐसा नहीं कहता है कि उस दस्तावेज से बनने वाली प्रत्येक प्रति सही होगी, या उस दस्तावेज से किया हुआ प्रत्येक अनुवाद सही होगा। सच्चाई तो यह है कि, यिर्मयाह 8:8 जैसे स्थानों में, पवित्रशास्त्र स्वयं कहता है कि बाइबल के दस्तावेजों की प्रतियों में गलतियाँ सम्मिलित हो सकती हैं। और हम सभों ने यह देखा है कि बाइबल के दस्तावेजों के विभिन्न अनुवाद एक दूसरे से बहुत ज्यादा भिन्न होते हैं।

क्योंकि जैविक प्रेरणा का सिद्धान्त केवल पवित्रशास्त्र के मूल पाठ तक ही विस्तार रखता है, इसलिए केवल उन्हीं दस्तावेजों में परमेश्वर स्वयं की ओर से पूर्ण अधिकार दिया गया है। वह परिवर्तन जो इन मूलपाठों में इनकी प्रतियाँ में सदियों के बीतने के साथ हुआ है परमेश्वर की ओर से प्रेरित नहीं है, और न ही इन मूलपाठों का

अनुवाद। इसलिए, हमारे आत्मविश्वास में वृद्धि करने के लिए कि हमने पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ को सही रूप से समझ लिया हमें इसे जानने के लिए हर सम्भव प्रयास और उन लेखों का अध्ययन करना चाहिए जो कि वास्तव में परमेश्वर की ओर से प्रेरित हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, हमारे दिनों में, हम कुछ सीमा तक पवित्रशास्त्र के मूल दस्तावेजों से दूर हो चुके हैं क्योंकि वह अब और ज्यादा हमारे लिए उपलब्ध नहीं है। वह किसी पवित्र मन्दिर या संग्रहालय में विद्यमान नहीं है। हमारे पास केवल मूलपाठ और अनुवाद ही उपलब्ध हैं। और इन प्रतियों और अनुवादों का अधिकार सदैव इस बात पर निर्भर करता है कि वे कितना ज्यादा अच्छी तरह से उन मूल दस्तावेजों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें बाइबल के लेखकों ने आत्मा की प्रेरणा के अधीन उत्पादित किया।

इस तथ्य को अक्सर मसीही विश्वास के विरोधियों के द्वारा पवित्रशास्त्र के अधिकार को पूरी तरह इन्कार कर दिए जाने के सम्बन्ध में उठाया जाता है। धर्मनिरपेक्षतावादी यह तर्क देते हैं कि हम नहीं जानते हैं कि पवित्रशास्त्र के मूल पाठ ने क्या कहा है, और किस मात्रा में इसका पालन किया जाना चाहिए। मुस्लिम निरन्तर यह तर्क देते रहते हैं कि कुरआन को पूर्ण तरीके से अल्लाह द्वारा संरक्षित किया हुआ है, और इसलिए वे कुरआन को बाइबल से ज्यादा मानते हुए इसके ऊपर भरोसा करते हैं। ये मुद्दे अक्सर सामने आते रहते हैं जिसके कारण हमें कुछ देर रूक कर इनके लिए कुछ विवरण प्रदान करना चाहिए।

सबसे पहले, मसीह के अनुयायियों को एक सबसे महत्वपूर्ण बात यह स्मरण रखनी चाहिए कि यीशु के दिनों में भी पुराने नियम के मूल दस्तावेज विद्यमान नहीं थे। पुराने नियम की पुस्तकों के इब्रानी संस्करण थोड़ी सी भिन्नता के साथ उस समय विद्यमान थे। और वहाँ पर अरामी के संस्करण भी विद्यमान थे, साथ ही सप्तवंगीता, जो कि पुराने नियम का यूनानी अनुवाद था, के कई संस्करण विद्यमान थे। परन्तु यीशु और उसके प्रेरितों ने अभी भी यही विश्वास किया कि पवित्रशास्त्र जो उनके पास उपलब्ध था वह परमेश्वर के लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए विश्वनीय और पर्याप्त था। इसी तरह से, आरम्भिक कलीसिया ने नए नियम के मूल दस्तावेजों की कई प्रतियों को उपयोग किया क्योंकि वे यह विश्वास करते थे कि ये विश्वनीय प्रतियाँ परमेश्वर के लोगों को निर्देशित करने के लिए पूरी तरह से पर्याप्त थीं।

दूसरा, आधुनिक मसीही विश्वासियों को कई दशकों की पवित्रशास्त्र की प्राचीन प्रतियों की तुलना और अध्ययन के लिए समर्पित विद्वानों के अनुसन्धान का लाभ मिला है। इन विवरणों ने बार बार यह पुष्टि की है कि बाइबल के इब्रानी और यूनानी मूलपाठ अन्य पुरातन लेखों के मूलपाठों की अपेक्षा ज्यादा विश्वसनीय हैं। अपनी योजना में, परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र को उल्लेखनीय तरीकों से संरक्षित रखा। इसी कारण से, जो बाइबल आज हमारे पास है, यदि हम इसकी व्याख्या सावधानी से करते हैं तो यह अभी भी मसीह की कलीसिया का मार्गदर्शन करने के लिए पर्याप्त है।

> **यदि हम पुरातन इतिहास को पुस्तकों में प्रेषित कर रहे होते, तो इन्हें हाथों से एक शास्त्री के द्वारा लिखा जाता था और इसे अक्षर दर अक्षर और शब्द दर शब्द लिखा जाना चाहिए था। जब ऐसा होता था तो कई तरह की स्वाभाविक लिपिकीय विभिन्नतायें आ जाती थीं जैसे कि: वर्तनी सम्बन्धी गलती, शब्द का छूट जाना, शब्द क्रम में परिवर्तन का आना और ऐसी ही कई अन्य। इनका होना अपरिहार्य है यदि बाइबल को पूरे इतिहास में सामान्य और स्थान में प्रेषित किया जाना होना। परन्तु प्रश्न यह है कि ये परिवर्तन अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, और बहुत ज्यादा सार्थक हैं और इतनी ज्यादा गंभीर कि यह इस प्रश्न को सामने लाते हैं कि क्या हमारे पास पवित्रशास्त्र के मूल शब्द हैं या नहीं। ठीक है, इस बात को निर्धारित करने के लिए कि हमारे पास पवित्रशास्त्र के मूल शब्द हैं या नहीं, हम सामूहिक रूप से शेष पाण्डुलिपियों पर देख सकते हैं जो हमारे पास हैं और एक दूसरे के साथ इनकी तुलना कर सकते हैं, और यह देख सकते हैं कि कितने ज्यादा परिवर्तन समय के व्यतीत होने के साथ इसमें हुए हैं। और अच्छा समाचार यह है कि जब बात बाइबल की आती है तो हमारे पास बाइबल की इतनी ज्यादा पाण्डुलिपियाँ हैं कि हम इनकी आपस में तुलना कर सकते हैं, हम यह देख सकते हैं कि वे समय के व्यतीत होने के साथ विकसित हुई हैं, और यह देख सकते हैं कि वास्तव में मूल पाठ क्या था। और यह हमें बहुत ज्यादा आत्मविश्वास देता है कि जो शब्द आज हमारे पास हैं वही शब्द मूल रूप में तब लिखे गए थे। इसलिए, हाँ, यह बात मानने योग्य है कि**

शास्त्रियों ने समय समय पर मूलपाठ में परिवर्तन किया परन्तु इस तरीके से नहीं किया कि हमें मूलपाठ को विश्वासयोग्य तरीके से पुन: प्राप्त ही नहीं कर सकते हैं।

-डॉ माइकल जे क्रूगर

सदी दर सदी बाइबल की प्रतियों को हाथों के द्वारा नकल किया गया है। सच्चाई तो यह है कि बाइबल की सारी प्रतियों की नकल को 1454 तक हाथों द्वारा ही किया जाता रहा है...इसलिए यह संक्षिप्त उत्तर देना कि बाइबल समय के व्यतीत होने के साथ भ्रष्ट हो गई है: हाँ इसमें कोई सन्देह नहीं कि हुई है। परन्तु इसका लम्बा उत्तर यह कहता है कि, यह कैसे भ्रष्ट हुई है और यह किस सीमा तक भ्रष्ट हुई है? जब इस तरह के मुद्दों तक बात आती है, तो यह लगभग पुस्तक दर पुस्तक के ऊपर निर्भर करता है, परन्तु एक सबसे अद्भुत बात पवित्रशास्त्र की नकल बनाने के बारे में यह है कि यहाँ पर कोई ऐसा महत्वपूर्ण धर्म सिद्धान्त नहीं है जो कि इन लिपिकीय विभिन्नताओं के कारण खतरे में पड़ गया हो। यह एक अद्भुत सच्चाई है...हम लगभग यह कह सकते हैं कि एक तरह की गुरूत्वीय शक्ति, अर्थात् दृश्य के पीछे कोई है जो कि हमारे लिए मूलपाठ को संरक्षित किए हुए हैं। परन्तु एक बार फिर, यहाँ ऐसा कोई महत्वपूर्ण सिद्धान्त नहीं है जिसे कि मसीही विश्वास के मुख्य सिद्धान्त के रूप में स्वीकार किया गया हो जो कि इन विभिन्नताओं के कारण प्रभावित हुआ हो।

-डॉ डैनियल बी वालेस

परन्तु फिर भी, आधुनिक अनुवादक सिद्ध नहीं हैं, हमें सदैव उन्हें अनुसन्धान की आज्ञा के अधीन लाते हुए सुधार करते रहना चाहिए। इससे भी आगे, हमें कभी भी पवित्रशास्त्र के लिए हमारी व्याख्याओं को किसी एक वाक्य में परिवर्तन लाने के लिए, किसी विशेष शब्द के विकल्प में, या कुछ अन्य छोटी चीजें जो कि मात्र पुरातन पाण्डुलिपियों में या पवित्रशास्त्र के किसी एक विशेष अनुवाद में प्रकट होती हैं, पर बहुत ज्यादा निर्भर होने के लिए अनुमति नहीं देनी चाहिए। हमें पवित्रशास्त्र के कई अन्य भागों के साथ मूलपाठ के विशेष भाग के लिए की गई हमारी व्याख्याओं की पुष्टि करने के लिए कड़ी मेहनत की आवश्यकता है।

जैविक प्रेरणा की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, आइए हम बाइबल के दस्तावेज में पवित्रशास्त्र की हमारी जाँच-पड़ताल पर जोर देते हुए दूसरे धर्म वैज्ञानिक आधार को देखें, अर्थात् दिव्य समायोजन का सिद्धान्त।

दिव्य समायोजन

समायोजन का सिद्धान्त यह सूचित करता है कि पवित्रशास्त्र में सब कुछ सम्मिलित है – इसमें शब्द, व्याकरण और साहित्यक शैली जैसी बातें भी सम्मिलित है – जो कि अपने दिन की सांस्कृतिक और भाषाई स्वीकृत मानकों के अनुरूप उठी हैं। इसलिए, यदि हम सावधानी से अपने ध्यान को उन तरीकों पर केन्द्रित करें जिनमें पवित्रशास्त्र इन स्वीकृत मानकों को दर्शाता है, जिन्हें हम उचित ढंग से व्याख्या किया हुआ पाएंगे।

एक और उदाहरण के रूप में, सुनिए यूहन्ना 20:16 के विवरण को:

यीशु ने उस से कहा, "मरियम!" उस ने पीछे फिरकर उस से इब्रानी में कहा, "रब्बूनी!" (अर्थात् हे गुरू)

(यूहन्ना 20:16)।

कोष्ठक में दिए हुए शब्दों के ऊपर विशेष ध्यान केन्द्रित करें। यह मूलपाठ यूनानी में लिखा हुआ है, परन्तु जब यूहन्ना ने मरियम को उद्धृत किया है, तो उसने "शिक्षक" के लिए यूनानी शब्द का उपयोग नहीं किया; उसने अरामी के शब्द को उपयोग किया, और फिर अनुवाद को प्रस्तुत किया।

यूहन्ना ने सबसे पहले मरियम के शब्दों को अरामी शब्दावली के शब्द *रब्बूनी* से सम्बोधित किया जो कि वह वास्तविक शब्द था जिसे मरियम ने यीशु को बोला था। परन्तु ऐसा जान पड़ता है कि यूहन्ना ने यह विश्वास किया कि उसके प्रथम पाठकों की बहुगिनती अरामी भाषा को नहीं जानती थी। इसलिए, उसने अपने मूलपाठ को उन्हें अनुवाद देते हुए समायोजित किया ताकि वे समझ सकें: जो कि यूनानी शब्द *डिडास्कालोस* है। *रब्बूनी* को पहले उपयोग करने के द्वारा, यूहन्ना ने झिझक के क्षणों को उत्पन्न कर दिया जिसने मरियम की प्रतिक्रिया के नाटक को ऊँचा उठा दिया। यूहन्ना के मूलपाठ ने उसके पाठकों में मरियम की आनन्द से भरकर रोने की वास्तविक आवाज

की कल्पना के लिए मार्गदर्शन दिया, उनकी सहायता की कि वह पुनरूत्थित उद्धारकर्ता में अपने आनन्द की सराहना कर सके।

इस तरह के साहित्यिक औजार और स्वीकृत मानक पवित्रशास्त्र के मूल दस्तावेजों को समायोजित करने की महत्वपूर्णता को प्रदर्शित करते हैं, और मूल अर्थ की हमारी जाँच-पड़ताल के सम्बन्धित ऐसे ही मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

> **जब आप बाइबल पढ़ते हैं, तो यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि लेखकों ने वही किया जिससे उनके मूल पाठकों को जो कुछ मूलपाठ कह रहा था उसे समझने में सहायता प्राप्त हो सके। इसलिए, उदाहरण के लिए, सुसमाचार लेखकों ने हो सकता है कि अपने प्रथम पाठकों के लाभ के लिए अरामी या इब्रानी भाषा में अनुवाद किया हो। या कई बार कई स्थान अपने सम्बन्ध को अन्य स्थानों से होने की ओर संकेत करते हो ताकि वे स्वयं को उस भौगोलिक स्थिति के अनुकूल बना सकें जिनमें यह लिखे गए थे। और यहाँ पर सभी तरह के अन्य तरीके भी जिनमें यह बिल्कुल स्पष्ट पता चलता है कि लेखकों ने यह सोचा मूल पाठकों को मूलपाठ को समझने के लिए सहायता की आवश्यकता है ताकि वे बाइबल को उचित तरीके से पढ़ने के लिए उन औजारों को अपने हाथों में, जैसे वे हैं वैसे ही ले सकें, जिनकी उन्हें आवश्यकता थी।**
>
> **- डा. शिमौन विबर्ट**

> **यदि यह मानव है तो इसकी प्रत्येक बात का सांस्कृतिक संदर्भ होगा। आप मानवीय भाषा और मानवीय संस्कृति के बिना मानव के बारे में बिल्कुल भी कुछ समाधान नहीं कर सकते हैं। और इसलिए, जब परमेश्वर अपने सन्देश को देता है, तो वह अपने सन्देश को इस तरीके से देता है कि हम इसे समझ सकें। जब यह शब्दों में होता है, जैसा कि पवित्रशास्त्र है, तो यह एक विशेष भाषा में होगा। और इसलिए, यह हमारे पास संस्कृतियों की ठोस संरचना में आता है जिसमें यह हमें दिया गया था। अब कुछ बातें स्पष्ट रूप से प्रत्येक संस्कृति से परे हैं। मेरे कहने का अर्थ है कि, "तू व्यभिचार न करना" सभी संस्कृतियों में एक जैसा ही है...परन्तु पवित्रशास्त्र में ऐसी बातें भी है जैसे कि एक छत के चारों ओर मुंडेर का निर्माण करना, या छत के चारों ओर बाड़ा बनाना, ताकि तेरा पड़ोसी छत से नीचे न गिर जाए और तुझ पर लहू का दोष न आ पड़े। ठीक है, मेरे पड़ोस में, तो हमारे पास समतल छतें नहीं हैं। सामान्य तौर पर हमारे पड़ोसी छत पर नहीं जाते हैं, इसलिए छत के चारों ओर बाड़ा कोई मुद्दा नहीं रखता है। परन्तु यह सिद्धान्त सभी संस्कृतियों में लागू हो सकता है, और सिद्धान्त यह है कि तुझे अपने पड़ोसी की सुरक्षा के बारे में ध्यान रखना चाहिए। तू अपने भाई या बहिन का रखवाला है। पवित्रशास्त्र के सभी वचन सभी परिस्थितियों के लिए नहीं है। यह तो हर समय के लिए हैं, परन्तु यह प्रत्येक परिस्थिति के लिए नहीं है। हमें यह जानने की आवश्यकता है कि परिस्थितियाँ कैसी हैं, और हमें यह पता लगाने की आवश्यकता है कि कैसे यह इन विभिन्न परिस्थितियों पर उचित तरीके से लागू होता है, क्योंकि इसी तरीके से परमेश्वर ने इसे हमें दिया है।**
>
> **- डा. क्रेग एस. किन्नर**

जैसा कि हमने देखा, कि पवित्रशास्त्र स्वयं लेखक, दस्तावेज और बाइबल के प्रत्येक हिस्से के श्रोता के ऊपर ध्यान देने के लिए एक शक्तिशाली धर्मवैज्ञानिक आधार को उपलब्ध करता है। अब इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, इन तीनों के ऊपर अपने ध्यान को केन्द्रित करना मूल अर्थ के मार्गदर्शन के लिए बहुत ज्यादा श्रमसाधना की मांग करता है। परन्तु जितना अधिक हम लेखक, दस्तावेज और बाइबल के संदर्भ के मूल श्रोताओं के बारे में जान जाते हैं, उतने अधिक उत्तम तरीके से हम मूल अर्थ की खोज कर पाते हैं। और जितना ज्यादा हम मूल अर्थ को समझते हैं, उतना उत्तम तरीके से हम पवित्रशास्त्र को हमारे आज के जीवनों में लागू करने के लिए सक्षम होंगे।

अब हमने मूल अर्थ क्या होता है, को देख लिया है और इसके धर्मवैज्ञानिक आधार की खोज कर ली है, इसलिए आइए अब हम पवित्रशास्त्र की हमारी जाँच-पड़ताल में मूल अर्थ के महत्व की ओर ध्यान को केन्द्रित करें।

महत्व

हम उचित जाँच-पड़ताल की महत्वपूर्णता पर दो तरीकों से ध्यान देंगे। सबसे पहले, हम कलीसियाई इतिहास में इस प्रक्रिया की विशेषता को देखेंगे, विशेषकर प्रोटेस्टेन्ट सुधारवाद के समय के मध्य। और दूसरा, हम

आधुनिक कलीसिया की कुछ चुनौतियों को सम्बोधित करेंगे जिन्होंने मूल अर्थ की जाँच-पड़ताल की महत्वपूर्णता को छूट प्रदान की है। आइए कलीसियाई इतिहास को संक्षिप्त में देखते हुए आरम्भ करें।

कलीसियाई इतिहास

बाइबल आधारित व्याख्या के आधुनिक जोर में मूल अर्थ की खोज करना कोई नई बात नहीं है। यह सत्य है कि कुछ निश्चित समयों में मसीही कलीसिया ने इसकी बजाए विस्तृत व्याख्याशास्त्र अर्थात् भाष्यतंत्र पद्धति की वकालत की है जो कि हमारे पास उपलब्ध आज की पद्धति की अपेक्षा मूल अर्थ के प्रति बहुत ही कम सम्बन्धित है। परन्तु फिर भी, मसीहियत के पूरे इतिहास में, प्रमुख धर्मशास्त्रियों ने आग्रह किया है कि पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ की खोज करना बाइबल की व्याख्या का एक अनिवार्य हिस्सा है।

आरम्भ की कलीसिया की एक चिंता यह थी कि पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ को उठ रही भ्रान्त शिक्षाओं के समूहों के विरूद्ध कैसे संरक्षित रखा जाए जो कि अपने स्वयं के प्रयोजनों को प्राप्त करने के लिए अर्थ को अनर्थ कर देते थे। कलीसिया के इतिहास में कई आरम्भिक लेखकों ने बाइबल की पुस्तकों के मूल सन्देश को संरक्षित करने के लिए कठोर मेहनत की क्योंकि केवल मूल सन्देश ही अधिकारिक था।

उदाहरण के लिए आरम्भिक धर्माचार्य इरानियुस, जो कि 130 से 202 ई. सन्., तक रहा, ने पौलुस के लेखों की झूठी व्याख्याओं का अपनी पुस्तक *अंगेष्ट हेरीसिसीज़* अर्थात् भ्रान्त शिक्षाओं के विरुद्ध, की पुस्तक 3, के अध्याय 7, के भाग 1 में खण्डन किया है। सुनिए इरानियुस वहाँ पर क्या कहता है:

> **उनकी पुष्टि के अनुसार कि पौलुस ने कुरिन्थियों को लिखे हुए अपने दूसरे पत्र में स्पष्ट कहा है कि, "जिसमें इस संसार के परमेश्वर ने उनकी आँखों को अन्धी कर दिया है कि वे विश्वास न करें," और इस बात पर टिके रहना कि इस संसार में केवल वास्तव में एक ही परमेश्वर है, परन्तु अन्यों के लिए जो कि सभी अधिकारों, और आरम्भ और शक्तियों से परे हैं...वे...नहीं जानते कि पौलुस के लेखों का अध्ययन कैसे किया जाए।**

इरानियुस गूढ़ज्ञानवादी शिक्षकों का खण्डन कर रहा था जो यह विश्वास करते थे कि यीशु एक उच्च परमेश्वर की ओर आया था न कि पुराने नियम के सृष्टिकर्ता परमेश्वर की ओर से। इन झूठे शिक्षकों ने यह विश्वास किया कि 2 कुरिन्थियों 4:4 यह सिखाता है कि पुराने नियम का "परमेश्वर इस संसार" के लोगों की आँखों को नए नियम के उच्चत्तम ईश्वर के अस्तित्व के प्रति अन्धा कर दिया है, जो कि सभी "अधिकारों, आरम्भ और शक्तियों" से परे हैं। इरानियुस ने अपनी इस पुस्तक को यह दर्शाने के लिए समर्पित किया है कि गूढ़ज्ञानवादी व्याख्याकार नहीं जानते थे कि कैसे पौलुस के लेखों का अध्ययन किया जाता है, क्योंकि वे पौलुस के मूल अर्थों से चूक रहे थे।

यूरोप में मध्यकालीन युग के मध्याहान्, में कुछ गंभीर घटनायें घटी जिसमें पवित्रशास्त्र को मुख्य तौर पर कलीसिया की परम्परा के संदर्भ में देखा गया। परन्तु वहाँ पर ऐसा भी शक्तिशाली विश्वासी था जिसमें मूल अर्थ या *सेन्सुस लिटरालिस,* जैसा की अक्सर इसे पुकारा जाता है, को मूल्य दिया गया था।

उदाहरण के लिए, प्रसिद्ध धर्मशास्त्री थॉमस एक्विनास ने अपने साहित्य *सुम्मा थियोलोजिका,* अर्थात् केवलमात्र धर्मविज्ञानीय के भाग 1, के प्रश्न 1, के अनुच्छेद 10 में यह तर्क दिया है कि *सेन्सुस लिटरालिस* एक मूलपाठ में कहे जा रहे सभी अन्य अर्थों की नींव के रूप में कही जा सकती थी।

> **इस तरह से पवित्र लेख में कोई भी परिणाम उलझन भरा नहीं है, क्योंकि सारी की सारी अनूभूतियाँ एक ही नींव के ऊपर आधारित हैं अर्थात् – शाब्दिक पर – जिसमें से ही मात्र किसी एक तर्क को ही प्राप्त किया जा सकता है और न कि रूपकों में से इच्छित किए हुए में से।**

जैसा कि यह संदर्भ स्पष्ट संकेत करता है कि, एक्विनास ने यह विश्वास किया कि पवित्रशास्त्र में बहुत सारी अनुभूतियाँ हैं, परन्तु उसने जोर दिया कि "सारी अनुभूतियाँ एक ही नींव अर्थात्... शाब्दिक" के ऊपर आधारित हैं। और यह कि इस शाब्दिक अनुभूति "में से ही मात्र किसी एक तर्क को ही" - या कलीसिया की व्याख्या को ही - "प्राप्त किया" जा सकता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

बाद में, यूरोपीय पुनर्जागरण के मध्य चौदहवीं से लेकर सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में, साहित्य की व्याख्या में कलीसिया का नियंत्रण कम होना आरम्भ हुआ। परिणामस्वरूप, व्याख्या की पुष्टि के लिए विद्यमान कलीसिया की परम्परा पर जोर कमजोर होना आरम्भ हुआ, और पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ पर जोर में वृद्धि होना आरम्भ हुआ। इस अवधि के मध्यहान्, पुरातन यूनानी और लातीनी शास्त्रीय मूलपाठों की एक बड़ी संख्या का उनकी मूल भाषाओं में यूरोप के चारों ओर प्रसारित होना आरम्भ हुआ। और विद्वानों ने अपने ध्यान को इन मूलपाठों का अध्ययन उनकी मूल भाषाओं और ऐतिहासिक संदर्भ में आरम्भ करके केन्द्रित किया। इससे भी अधिक, उन्होंने अपनी व्याख्याओं को कलीसिया के अधिकार और परम्परा की अपेक्षा इन मूलपाठों की मूल भाषा पर आधारित की।

इस परिवर्तन ने पंद्रहवीं और सोलहवीं सदी में प्रोटेस्टेन्ट धर्मसुधार के मध्य व्याख्याशास्त्र अर्थात् भाष्यतंत्र विज्ञान में जो कुछ हुआ था, के लिए नींव का कार्य किया। मार्टिन लूथर और जॉन केल्विन जैसे विद्वानों ने शास्त्रों की जाँच-पड़ताल को उनकी मूल भाषा और ऐतिहासिक संदर्भों में करने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। उन्होंने विश्वास किया कि पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ को जानने से वे बाइबल ही मात्र एक अधिकार उनके ऊपर है, यहाँ तक कि रोम के धर्मविज्ञान के ऊपर भी, को समझने के लिए सक्षम हो जाएंगे।

इवैन्जेलिकल विद्वानों के बीच में, पवित्रशास्त्र की व्याख्या का यह दृष्टिकोण "व्याकरणीय-ऐतिहासिक पद्धति" के रूप में पुकारा गया। इस पद्धति को पवित्रशास्त्र द्वारा सत्यापित किया गया है, जो कि कलीसिया के पूरे इतिहास में अति महत्वपूर्ण रही है, और धर्मसुधार के समय से लेकर पवित्रशास्त्र का अध्ययन करने के लिए प्रबल दृष्टिकोण रहा है।

> **मध्यकालीन युग में, पवित्रशास्त्र सारे समाज की पुस्तक होती थी। सभी शिक्षित लोग अपने ज्यादातर समय को पवित्रशास्त्र के अध्ययन में लगाते थे, और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह उनके समाज के साथ साथ कलीसिया में भी बहुत बड़ी भूमिका निभाता था। और पवित्रशास्त्र के उस अध्ययन के द्वारा, मध्यकालीन युग के मध्य, उन्होंने कुछ सीमा तक पवित्रशास्त्र के पठन् के विस्तृत तरीके को विकसित कर लिया था, जो कि मूल पाठ की कई विभिन्न परतों के ऊपर केन्द्रित था। पवित्रशास्त्र का मूल अर्थ, निश्चित ही मध्यकालीन युग के व्याख्यात्मक पद्धति का एक अति महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है, यदि हमारे कहने का अर्थ ऐतिहासिक तौर पर ग्रंथकार की इच्छा से है। यद्यपि, इसे एक बड़े अच्छे साधन के रूप में देखा गया था। उत्तरोत्तर व्याख्याओं के विपरीत, ग्रंथकार की इच्छा या मूल अर्थ को अच्छे पठन् के लिए आधार के रूप में देखा गया था, परन्तु यहाँ ऐसा कुछ था जिसे मूल अर्थ की तुलना में और भी ज्यादा महत्वपूर्ण रूप में देखा गया। यह ख्रिष्टीयविज्ञान था, ख्रिष्ट के ऊपर ध्यान केन्द्रित करना, और अक्सर युगान्तशास्त्र या अन्तिम समय में घटित होने वाली बातों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करने से था या बाइबल के अन्तिम ख्रिष्टीयविज्ञान के पठन् से था। और इसलिए ग्रंथकार की इच्छा का बहुत अधिक महत्व था परन्तु इसे अन्तिम खेल के रूप में नहीं देखा गया था। इसे केवल समाप्ति के लिए एक साधन मात्र के रूप में देखा गया था।**
>
> **-डॉ जोनाथन टी पेर्निंगटन**

मध्यकालीन युग में मूल अर्थ और कलीसिया की परम्परा के बीच के सम्बन्ध के बारे में प्रश्न पूछना कुछ इस तरह से है कि कदाचित् मध्यकालीन व्याख्याकार आपके ऊपर तिरछी नजरों से देखें, क्योंकि मध्यकालीन युग में वे गंभीरता से पवित्रशास्त्र के अर्थ के बारे में चिन्तित थे... वे बाइबल के पास एक मौलिक कायलता के साथ आ रहे थे कि कलीसिया की परम्परा बाइबल की शिक्षा देने की थी। अब, बीसवीं सदी के प्रोटेस्टेन्टवादियों के रूप में हमें उन पर हँसना आसान है, परन्तु हम इस तरह उन्मुक्त लोग नहीं हैं। यहाँ पर असँख्य लोग हैं जो कि इधर उधर दौड़ रहे हैं जो यह कहेंगे कि, क्या आप जॉन केल्विन की पवित्रशास्त्र के प्रति दी गई शिक्षा के बारे में जानते हैं, या फिर जॉन वेस्ली, या मार्टिन लूथर, या किसी अन्य की। इस तरह से, जो कुछ मध्यकालीन युग में हो रहा है वह यह है कि वे एक ऐसे दृष्टिकोण का उपयोग कर रहे हैं जो कि पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने का है जो विश्वास के नियम की गतिशीलता के ऊपर आधारित है। जिस प्रश्न को मध्यकालीन व्याख्याकार पूछ रहे हैं वह यह है कि, "कैसे इस संदर्भ की

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

विशेषताओं के माध्यम से हमारे लिए प्रगट होने वाले विश्वास को प्रेरितों के द्वारा उनके आने वाले लोगों में पारित किया गया?"

-डॉ केरी विंजेंट

अब क्योंकि हमने बाइबल के मूल अर्थ की जाँच-पड़ताल को जो कि कलीसिया के पूरे इतिहास में महत्वपूर्ण था देख लिया है, इसलिए आइये हम इस विचार की कुछ चुनौतियों के ऊपर ध्यान को केन्द्रित करें जो कि आधुनिक कलीसिया में उठ खड़ी हुई हैं।

आधुनिक कलीसिया

हम ऐसे दिनों में रह रहे हैं जब किसी भी मूलपाठ के मूल अर्थ का महत्व है, केवलमात्र बाइबल के मूलपाठ का ही नहीं, जिन पर विभिन्न तरीकों से प्रश्न किए गए हैं। जैसा कि हमने पहले ही देख लिया है कि, कि अतीत में, कई व्याख्याकारों ने बाइबल के प्रत्येक संदर्भ के कई अर्थों को बोला है क्योंकि उन्होंने विश्वास किया है कि बाइबल परमेश्वर की ओर से आई थी जिसके मन को समझना समझ से परे की बात है। परन्तु इस आधुनिक संसार में, बाइबल के मूल अर्थ का मूल्य या किसी भी साहित्य के मूल अर्थ पर प्रश्न परमेश्वर के कारण नहीं किए गए हैं, परन्तु मानवीय सम्प्रेषण के स्वभाव के कारण किए गए हैं।

बीसवीं सदी के आरम्भ में, साहित्यिक आलोचना की आधुनिक विचारधाराओं ने मूल अर्थ की उपेक्षा करनी आरम्भ कर दी। सबसे आरम्भिक विचारधाराओं ने सामान्य तौर पर यह तर्क दिया कि पवित्रशास्त्र के लेखक और मूल श्रोता व्यापक रूप से अज्ञात थे। इतिहासकारों ने कहा कि लेखक और मूल श्रोता निश्चित ही पहचाने नहीं जा सकते थे। मानववैज्ञानियों ने यह जोर दिया कि हम प्राचीन संस्कृतियों को आधुनिक संस्कृतियों से निकलने वाले निष्कर्ष को लागू नहीं कर सकते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने यह सुझाव दिया है कि आधुनिक पाठक मज़बूती से प्राचीन लेखकों के इरादे को समझ नहीं सकते। और दार्शनिकों ने यह तर्क दिया है कि सारा मानवीय ज्ञान इतना ज्यादा व्यक्तिपरक है हम वास्तव में कभी भी यह नहीं जान सकेंगे कि ग्रंथकार क्या सोच रहे थे।

बीसवीं सदी के मध्य तक, पुरातन ग्रंथकारों और श्रोताओं की पहचान को लेकर निराशा ने कई व्याख्याकारों को मार्गदर्शन दिया कि वे उन्हें पूरी तरह से अनदेखा कर दें और पूरी तरह अपने ध्यान को मूलपाठ के ऊपर केन्द्रित करें। नए आलोचकों ने मूलपाठ का अध्ययन बिना किसी ऐतिहासिक संदर्भ के साथ करने का प्रयास आरम्भ किया। संरचनावादियों ने एक दस्तावेज में शब्दों के चुनाव में अर्थ को भाषाई पद्धति के अन्य सभी सम्भावित विकल्पों के साथ सम्बन्धित होने में पाया। और पाठक-प्रतिक्रिया आलोचकों ने उस अर्थ की ओर देखा जो कि मूलपाठ के समकालीन पाठकों की प्रतिक्रियाओं में पाया जाता है।

बीसवीं सदी के अन्तिम दशकों में, साहित्यिक आलोचक यह कहने के लिए इतना आगे चले गए कि मूलपाठ का अर्थ स्वयं में अज्ञात् था – या इससे भी ज्यादा गंदा था, या ज्यादा बुरा था। कुछ उत्तरोत्तर-संरचनावादियों ने आधुनिक पाठकों के ऊपर पुरातन लेखकों को उनके विचारों को लागू करने की अनुमति देने से इन्कार कर दिया। उन्होंने पाठकों को उत्साहित किया कि वे प्राचीन मूलपाठों को दिखाई देने वाले विरोधाभासों और अस्पष्टता पर ध्यान केन्द्रित करके "पुनर्निर्मित" करें ताकि मूलपाठ अबोधगम्य प्रगट हो। और कई आलोचक विद्वानों ने प्राचीन लेखकों को निरस्त कर दिया और आधुनिक पाठकों को उनके स्वयं के प्रयोजनों को प्राप्त करने के लिए पवित्रशास्त्र के शब्दों को तोड़ मरोड़ करने के लिए प्रोत्साहित किया है।

यह भले ही आश्चर्यजनक सुनाई देता हो, परन्तु वास्तव में आलोचक विद्वानों से कई उपयोग में आने वाले आत्मबोधों को प्राप्त किया जा सकता है जो कि पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ को खोजने के मूल्य को चुनौती देते हैं। परन्तु कुल मिलाकर, हम सुधारवाद से प्राप्त हुई शिक्षाओं को स्मरण रखने के लिए बुद्धिमान हैं। व्याख्याशास्त्र अर्थात् भाष्यतंत्र विज्ञान अत्याचार, मानवीय व्याख्याकारों से बचने के लिए केवल एक ही विकल्प है, वह यह है कि बाइबल के संदर्भों को उनके ऐतिहासिक संदर्भ में देखना जिनमें पवित्र आत्मा ने सबसे पहले उन्हें प्रेरित किया। यही केवल एक तरीका है जिसमें हम व्यक्तियों, सांस्कृतिक आंदोलनों, कलीसियाओं और अन्यों से जो कि निरन्तर पवित्रशास्त्र को स्वयं के प्रयोजनों के लिए उपयोग करते हैं और दावा करते हैं कि उनके पास पवित्रशास्त्र का समर्थन है परन्तु उनके अपने अधिकार को अन्य लोगों के जीवनों में लागू करने से बचाने के लिए बाइबल के अधिकार को अन्य लोगों के विरुद्ध बनाए रखने के लिए यही एक सुरक्षित मार्ग है।

सुधारवादियों ने यह देखा कि कलीसियाई अधिकारियों की व्याख्या के अत्याचार से बचने का केवल एक ही तरीका बाइबल को उस ऐतिहासिक संदर्भ में देखने से है जिसमें पवित्र आत्मा ने इसे प्रेरित किया था। बहुत कुछ इसी तरह से, बाइबल के अधिकार को समकालीन व्यक्तियों, राजनीतिक आंदोलनों, कलीसियाओं और अन्य शक्तियों के द्वारा भाष्यतंत्र के अत्याचार के विरूद्ध सुरक्षित रखने के लिए एक ही मार्ग बाइबल के मूल अर्थ की खोज करते रहना है।

सारांश

पवित्रशास्त्र की जाँच-पड़ताल के ऊपर इस अध्याय में, हमने पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ को हमारी जाँच-पड़ताल की वस्तु के रूप में रखते हुए परिभाषित किया है। हमने मूल अर्थ के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हुए इसके धर्मवैज्ञानिक आधार की व्याख्या की है। और हमने मूल अर्थ के ऊपर उचित ध्यान देते हुए इसके महत्व के ऊपर देखा है।

जैसा कि हमने इस पूरे अध्याय में देखा है कि, बाइबल की व्याख्या के कई पहलू मानों एक पुरातात्विक खुदाई पर जाने की तरह हैं। हम पवित्रशास्त्र को उसके प्राचीन ऐतिहासिक संदर्भ में उसके मूल अर्थ को समझने के लिए जाँच-पड़ताल करते हैं – उन तरीकों की जिसमें पवित्र आत्मा और उसके द्वारा प्रेरित लेखकों ने उनके मूल श्रोताओं की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करने का अभिप्रायों से उन्हें लिखा है। बाइबल के प्रत्येक मूलपाठ के मूल अर्थ को सर्वोत्तम तरीके से प्राप्त करना व्याख्या के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि मूल अर्थ ही पूरे इतिहास में उसके लोगों के लिए परमेश्वर स्वयं के सारे अधिकार को अपने में रखता है। और इसी लिए, हमें सदैव बाइबल के प्रत्येक संदर्भ के मूल अर्थ के प्रति हमारी समझ को उन्नत करने के लिए तैयार रहना चाहिए, ताकि हम यह निश्चित कर सकें कि प्रत्येक आधुनिक उपयोग जिसे हमें प्राप्त करते हैं, वह इसके अधिकारिक मूल अर्थ के अनुरूप है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम